Aethel Research Digest Juncture: An International Journal
E-ISSN: 3139-1672
Vol. 1, Issue 1, November- December 2025
Received: 28/11/2025 Revised: 09/12/2025
Accepted: 13/12/2025 Published:15/12/2025

हिंदी भाषा और रोजगार के अवसर

प्रा. डॉ. सुनिल खोत
हिंदी विभाग, श्रीमती मीनलबेन महेता कॉलेज, पांचगणी
ई-मेल: sunilkumarkhot@gmail.com मो. नं: - 9527994054

सारांश (Abstract)

हिंदी भाषा न केवल भारत की राजभाषा है, बल्कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। सूचना–प्रौद्योगिकी, मीडिया, व्यवसाय, पर्यटन, शिक्षा, अनुवाद एवं सरकारी सेवाओं में हिंदी का उपयोग निरंतर बढ़ने से रोजगार के नए रास्ते खुल रहे हैं। भारतीय फिल्म उद्योग, धारावाहिक, पत्रकारिता, मुद्रित संचार माध्यामों आदि में रोजगार की नई संभावना है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी भाषा के बढ़ते उपयोग, उससे जुड़े करियर विकल्पों, तथा डिजिटल युग में हिंदी की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिंदी आधारित नौकरियों में वृद्धि तेज़ी से हो रही है तथा भविष्य में इसकी मांग और व्यापक होगी।

बीज शब्द: *रोजगार, जनसंचार, भूमंडलीकरण, कार्यालयीन हिंदी, पत्रकारिता, दूतवास इ.*

१. प्रस्तावना:-

एक प्रसिद्ध कहावत है-बेकार मन, भुतों का डेरा। वस्तुतः यह कहावत मनौवैज्ञानिक स्तर पर यह स्पष्ट करती है कि काम करने में समर्थ बौर योग्य व्यक्ति के लिए बेकार बैठना अभिशाप है। काम करने योग्य स्वस्थ व्यक्ति बेकार रहने पर अपने आप को हीनता तथा समस्या का अनुभव करता है। समाज के लिए भी वह दिशाहीन तथा समस्या का कारण बनता है। रोटी, कपडा और मकान के साथ-साथ रोजगार भी मानव की मूलभूत आवश्यकता है। वास्तव में रोजगार भी मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता है। ईश्वर ने हमें अन्य प्राणीजीवों की तुलना में मस्तिष्क, हाथ, पाँव, बुद्धि

आदि शक्तियाँ अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक सक्षम दी है। साथ ही हृदय और भावना प्रधान भी बनाया। उपर्युक्त शक्तियों के सहारे ही मानव क्रियाशील बनता है। एक विशिष्ट अवस्था प्राप्त हो जाने पर प्रत्येक व्यक्ति रोजगार चाहता है। रोजगार व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है। शिक्षा से व्यक्ति के मन में स्वावलंबन तथा स्वातंत्र्य की भावना बढती है। परंपरागत व्यवसाय तथा पितृसत्ताक व्यवसाय को त्यागकर नविन रोजगार के प्रति शिक्षा के कारण मनुष्य आकृष्ठ होता है। भूमंडलीकरण की दौर में भारत में ही नहीं विश्व में रोजगार की समस्या शैतान की तरह बन गयी है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के कारण समूचे विश्व में परिवर्तन निरंतर हो रहा है। वर्तमान स्थिति में सूचना प्रौद्योगिकी संगणक, संचार माध्यम आदि ऐसे अनेक क्षेत्र है जिसमें रोजगार मिलना संभव है। इंटरनेट के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी का विराट रूप सामने आया है जिसमें कौशल्यधिष्ठित काम करनेवालों की आवश्यकता है। संक्षेप में खुद को कामियाब बनाकर रोजगार हाशिल करना जरूरी है।

२. **संशोधन समस्या (Research Problem)**

भारत में हिंदी भाषा बोलने वालों की संख्या अत्यधिक होने के बावजूद कई रोजगार क्षेत्रों में हिंदी को आवश्यक दक्षता के रूप में स्थापित नहीं किया गया है। साथ ही डिजिटल अर्थव्यवस्था में अंग्रेज़ी की प्राथमिकता के कारण हिंदी भाषा कौशल रखने वाले युवाओं को उपयुक्त मंच नहीं मिल पाता। यह अनुसंधान इस समस्या का विश्लेषण करता है कि हिंदी भाषा संपन्न युवा किन-किन क्षेत्रों में कैसे और कितना रोजगार पा सकते हैं।

३. संशोधन का उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. हिंदी भाषा के उपयोग से उपलब्ध प्रमुख रोजगार अवसरों की पहचान करना।
2. डिजिटल, सरकारी और निजी क्षेत्रों में हिंदी भाषा की उपयोगिता और मांग का विश्लेषण करना।
3. हिंदी भाषा आधारित करियर में आवश्यक कौशल एवं योग्यता को स्पष्ट करना।
4. भविष्य में हिंदी भाषा से जुड़े रोजगार के विस्तार की संभावनाओं को समझना।

E-ISSN: 3139-1672

४. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति** पर आधारित है। डेटा का संकलन द्वितीय स्रोतों—जैसे शोध-पत्र, वेबसाइटों, रोजगार पोर्टलों, मीडिया उद्योग रिपोर्ट, तथा मीडिया तथा रोजगार संबंधी पुस्तकों—से किया गया है। उपलब्ध सूचनाओं के तुलनात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष तैयार किया हैं।

५. हिंदी भाषा: रोजगार के अनेक अवसर

हिंदी भाषा लगभग 60 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है और यह भारत के उत्तरी, मध्य एवं पूर्वी राज्यों की प्रमुख संपर्क भाषा है। वैश्वीकरण, डिजिटलाइजेशन और हिंदी भाषी उपभोक्ता समूह के विस्तार के कारण विभिन्न उद्योगों को हिंदी विशेषज्ञों की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई है। आधुनिक समय में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं रही, बल्कि ज्ञान-उद्योग, मीडिया-उद्योग और सेवाक्षेत्र की महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति बन चुकी है। ऐसे संदर्भ में हिंदी भाषा रोजगार की दृष्टि से अत्यंत संभावनाशील क्षेत्र के रूप में उभर रही है। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिंदी भाषा में कौशल का विकास करके रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं। भूमंडलीकरण से विदेशों में भी हिंदी की लोकप्रियता बढती जा रही है। हिंदी से दूर जाने के बजाय युवाओं को इसमें करियर की तलाश करनी चाहिए। हिंदी भाषा में उच्य शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक, प्राध्यापक, सिनेमा, पत्रकारिता लेखन, अनुवाद, समाचार लेखन जैसे क्षेत्रों मे रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान युग संगणक का युग है। है। इसमें संदेह नहीं है कि संगणक ने पूरी दुनिया को एक गाँव में बदल दिया है। यदि भारत पर नजर डालें तो हमें दिखयी देगा की लगभग सभी क्षेत्रों में संगणक का प्रयोग हो रहा है। बैंक, रेल, हवाई क्षेत्र, डाक, बडे-बडे उद्योग, कारखने, व्यवसाय, आदि में हिसाब-किताब रखने के लिए संगणक का प्रयोग किया जा रहा है। संगणक ने फाइलों की

E-ISSN: 3139-1672

आवश्यकता कम कर दी है। ऐसी स्थिति में संगणक की दृष्टि से हिंदी में खुद को साक्षर बनाना आवश्यक है। देवनागरी लिपि अपनी वैज्ञानिकता के कारण संगणक के लिए उपयुक्त है।

- **रेल विभाग में हिंदी**

रेल विभाग में रेल आरक्षण, गाडियों के अवागमन, आदि सूचनाएॅ हिंदी में प्रदर्शित की जाती है। ऐसी स्थिति में मानक हिंदी यदि आपके पास हो तो यह रोजगार आपके हाथ में है।

- **जनसंचार माध्यमों में हिंदी:**

हिंदी के जरिए जनसंचार माध्यमों में रोजगार के अनेक अवसर हैं। मीडिया, मनोरंजन और सूचना का बाजार आज सर्वाधिक तीव्र गति से पनप रहा है। वैश्वीकिकरण के दौर में सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ हैं। हिंदी भाषा मीडिया की मुख्य भाषा के रूप में उभर कर सामने आ रही है। मुद्रित माध्यामों में एडिटर, प्रुफ रीडर, समाचारवाचक, रिर्पोटर आदि के रूप में रोजगार मिल सकता है। हिंदी समाचार पत्रों में वर्तनी त्रुटियों को जाँचने के लिए आच्छि भाषिकों की ही जरूरता होती है। आज 23 से भी ज्यादा हिंदी के समाचार चैनल है जिसमें हिंदी के जरिए रोजगार मिल सकता है।

- **राष्ट्रीय पत्रकारिता में हिंदी:**

हमारे देश में पत्रकारिता का क्षेत्र रोजगार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। 19 वीं सदी में हिंदी पत्रकारिता का विकास हुआ। इस क्षेत्र में साज-सजा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। भाषा के साथ-साथ शिल्प की और विशेष ध्यान देकर भावों की अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाता है। संक्षेप में पत्रकारिता एक सफल व्यवसाय बन गया है। इस व्यवसाय में विशुद्ध हिंदी का कौशल्य प्राप्त करनेवाले व्यक्तियों को रोजगार मिल सकता है। हिंदुस्तान, नवभारत टाईम्स जैसे समाचार पत्रों में रोजगार की उपलब्धता है। **डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय जी कहते हैं**-''स्वातंत्रता के पूर्व की राष्ट्रीय पत्रकारिता में हिंदी अपना स्थान पा चुकी थी। हिंदी पत्रकारिता देश भक्ति का पर्याय बन चुकी थी।''[1]
कार्यालयीन हिंदी, हिंदी भाषा का व्यवहारिक रूप है जिसका संबंध विभिन्न संस्थाओं के दैनिक

E-ISSN: 3139-1672

कामकाज से है। यह हिंदी का क्रियात्मक रूप है जो जिसके जरिए हिंदी भाषा को रोजगारन्मुख बनाया। हिंदी भाषा ने अपने आपको वाणिज्य प्रशासनिक एवं विदेशी भाषा के रूप में विकसित किया है। राजभाषा आधिनियम के अनुसार प्रत्येक सरकारी कर्मचारी हिंदी में काम करने के लिए बाध्य है। भारत के संविधान में व्यवस्था है कि देवनागरी लिपी में और हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया है।

- **अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी:**

अनुवाद के क्षेत्र में भी हिंदी की बहुत आवश्यकता है। आज अनुवाद एक सेतु की तरह है।आज अनुवाद की आवश्कता इसलिए है कि संपूर्ण विश्व में आपसी व्यापार एवं सांस्कृतिक आदान प्रदान होता है। नए शोध एवं ज्ञान का विपुल भंडार आज किसी एक देश तक सीमित नहीं रहता। विविध भारतीय भाषा साहित्यों में समन्वय, एकरूपता बनाने के लिए अनुवाद की अवश्कता है।

अलोक कुमार पाण्डेय जी इस संदर्भ में कहते हैं -"निजी क्षेत्र में भी बैंकिंग कारोबार बढ़ाने के लिए उपनगरों व ग्रामीण इलाकों में स्थानीय लोगों को भर्ती कर उन्हें स्थानीय भाषा में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। इसके अलावा अनुवाद आज सबसे बड़ा रोजगार बनता जा रहा है। न केवल साहित्यिक किताबों बल्कि मीडिया, फिल्म, जनसंपर्क, बैंकिंग क्षेत्र, विज्ञापन आदि सभी जगहों पर अनुवाद करने वालों की काफी मांग है। टीवी पर तमाम चैनलों के मूल अंग्रेजी कार्यक्रम हम रोज हिंदी में देखते हैं। दर्शकों और पाठकों को यह सुविधा अनुवाद के जरिए ही मिलती है। इसीलिए आज अंग्रेजी और अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद की बहुत मांग है।"[2]

आज भारत देश का काम बिना अनुवाद चल नहीं सकता। **डॉ.जयन्ती प्रसाद नौरियाल कहतें हैं-**"भारतीय भाषओं और बोलियों के विराट महासमुद्र में अनुवाद ही ऐसा साधन है जो हमारे बीच सेतु का कार्य करता है।"[3] अनेक प्रकाशकों पाठकों की बढती हुई मांग को पूरा करने के लिए विभिन्न भाषाओं से अनुवाद करने वाले अनुवादक की अवश्यकता होती है। इसके अलवा सरकारी कार्यालयों एवं दूतवासों में भी अनुवाद की अवश्यकता होती है। इस क्षेत्र में केंद्रिय हिंदी निदेशालय,

E-ISSN: 3139-1672

तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दीवली आयोग जैसे दो संस्थाएँ हिंदी में विशेष उल्लेखनिय कार्य है। कोई भी व्यक्ति एक स्वातंत्र अनुवादक के तौर पर अपली आजीविका संचालित कर सकता है और अपनी खुद की अनुवाद के क्षेत्र में अनुवादक के रूप में करियर स्थापित कर सकता है। विदेशों में भी अनुवाद का काम किया जा सकता है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी अनुवादक, राजभाषा अधिकारी, सहायक प्रबंधक एवं प्रबंधक के रूप में रोजगार मिलता है। संक्षेप में आज हिंदी के जरिए रोजगार मिलने का सांभाव्य क्षेत्र है-अनुवाद।

- **विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी:**

आज का युग विज्ञापन का युग है। विज्ञापन का क्षेत्र विविध लाभप्रद, दिलचस्प करियर के अवसर देता है। रेडिओ, टेलविजन, समाचारपत्र, पत्रिकाएॅ आदि का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है। यह माध्यम मनोंरजन के साथ-साथ सूचना एवं शिक्षा भी प्रसारित करतें है। किसी उत्पाद अथवा सेवा को बेचने के उद्देश से किया जाने वाला जनसंचार विज्ञापन है। औद्योगिकरण आज विकास का पर्याय बन गया है। उत्पादन बढने के कारण यह आवश्यक हो गया है कि उत्पादित वस्तुओं को उपभोगता तक पहुँचाया ही नहीं जाता बल्कि उसे उस वस्तु की जानकारी भी दी जाती है। आज विज्ञापन जीवन का अहम् हिस्सा बन चुका है। सुबह आँख खुलते ही चाय की चुस्की के साथ अखबार में सबसे पहले दृष्टि विज्ञापन पर ही जाती है। घर के बाहर पैर रखते हम विज्ञापन की दुनिया से घिर जाते हैं। विज्ञापन का मूल उद्देश ग्राहकों के अवचेतन मन पर छाप छोड देना। यह विज्ञापन विभिन्न माध्यमों द्वारा देखा जाता है-जैसे समाचार पत्र,चत्रिकाएॅ, टीवी,रेडिओ,वेबसाइट आदि। विज्ञापन में करियर आर्कषक है और प्रतिदिन खुल भी रहा है और चुनौतीपूर्ण भी है।

आशीष अंबर जी गध्य गुंजन में कहते हैं -"सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में हिंदी अधिकारी के पद बनाए गए है। निजी क्षेत्रों में भी बैंकिंग कारोबार बढ़ाने के लिए उपनगरों व ग्रामीण इलाकों में स्थानीय लोगों को भर्ती कर उन्हे स्थानीय भाषा में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। इसके अलावा अनुवाद आज सबसे बड़ा रोजगार बनता जा रहा है। न केवल साहित्यिक किताबों बल्कि

मीडिया, फिल्म, जनसंपर्क, बैंकिंग क्षेत्र, विज्ञापन आदि सभी जगहों पर अनुवाद करने वालों की काफी मांग है। टीवी पर तमाम चैनलों के मूल अंग्रेजी कार्यक्रम हम रोज हिंदी में देखते हैं। दर्शकों और पाठको को यह सुविधा अनुवाद के जरिए ही मिलती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि आज हिंदी भाषा का रोजगार के क्षेत्र में काफी महत्व बढ़ गया है। हमारे देश भारत में विज्ञापन का कारोबार हजारों करोड़ रूपए से ज्यादा का है। इसमें भी हिंदी में विज्ञापनों का बाजार तेजी से बढ़ा है। खास तौर से उत्तर भारत के राज्यों जो हर रारह से हिंदी भाषी राज्य कहें जाते हैं, विज्ञापन बाजार पर हिंदी का ही कब्जा है।"[4] स्पष्ट है कि विश्लेषण तथा संचार कौशल्य रखने वाले व्यक्ति को इस क्षेत्र में सुनहरा अवसर है। इस क्षेत्र में सफल करिसर बनाने के लिए सर्जनशीलता तथा लेखन के प्रति निष्ठा की आवश्यक होती है। हिंदी भाषा पर अपना अधिकार पाकर इस क्षेत्र में रोजगार हासिल किया जा सकता है।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि हिंदी में रोजगार के बहुत अवसर है। जैसे अनुवाद, विज्ञापन, जनसंचार माध्यम, केंद्र सरकार के कार्यालय, आदि क्षेत्र हिंदी में रोजगार की संभावना है। सूचना–प्रौद्योगिकी, मीडिया, व्यवसाय, पर्यटन, शिक्षा, अनुवाद एवं सरकारी सेवाओं में हिंदी का उपयोग निरंतर बढ़ने से रोजगार के नए रास्ते खुल रहे हैं। भारतीय फिल्में तो रोजगार का खजाना है। अलग- अलग समारोहों में, धारावाहिक में अभिनय करके रोजगार हासिल किया जा सकता है। हमारे देश में पत्रकारिता का क्षेत्र रोजगार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।मुद्रित माध्यामों में एडिटर, प्रुफ रीडर, समाचारवाचक, रिर्पोटर आदि के रूप में रोजगार मिल सकता है। वर्तमान स्थिति में सूचना प्रौद्योगिकी संगणक, संचार माध्यम, आदि ऐसे अनेक क्षेत्र है जिसमें रोजगार मिलना संभव है। इंटरनेट के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी विराट रूप सामने आया है जिसमें कौशल्यधिष्ठित काम करनेवालों की आवश्यकता है। संक्षेप में खुद को कामियाब बनाकर रोजगार हाशिल करना जरूरी है। संक्षेप में कहना हो तो हिंदी भाषा में रोजगार की दृष्टि से अत्यंत व्यापक और गतिशील क्षेत्र है। शिक्षा,

जनसंचार, अनुवाद, सरकारी सेवाएँ, साहित्य, डिजिटल उद्योग, कॉर्पोरेट क्षेत्र और सूचना-प्रौद्योगिकी—इन सभी क्षेत्रों में हिंदी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

संदर्भ संकेत:-

1. डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय (१९९२), प्रयोजनमूलक हिंदी,पृष्ठ-149
2. डॉ. जयलक्ष्मी. (2023). हिंदी भाषा में रोज़गार की संभावनाएँ और चुनौतियाँ. *अमृत काल (Amrit Kaal), ISSN: 3048-5118*, *1*(1), 31-35.
3. जनसत्ता (२०२५), हिंदी भाषा ओर रोजगार- https://www.jansatta.com/politics/hindi-language-and-employment/1821871/
4. डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल (२००४), अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, पृष्ठ-48
5. आशीष अम्बर (२०२५), हिंदी मे रोजगार कि संभावनाएं- https://gadyagunjan.teachersofbihar.org/hindi-mein-rozgaar-ki-sambhavnayein-ashish-amber/
6. प्रतिभा गौली. (2025). वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य का विकास. *ಅಕ್ಷರಸೂರ್ಯ (AKSHARASURYA)*, *8*(05), 163-to.
7. डॉ. मोनिया दीक्षित. (2023). हिंदी भाषा में समाजशास्त्र: अवस्था और अवसर. *अमृत काल (Amrit Kaal), ISSN: 3048-5118*, *1*(2), 1-7.
8. Dsouza, V. A. (2016). *हिंदी का वैश्विक परिदृश्य* (Doctoral dissertation, Tilak Maharashtra Vidyapeeth).